श्री आदिनाथ चालीसा

॥दोहा॥

शीश नवा अरिहंत को,

सिद्धन को, करूँ प्रणाम।

उपाध्याय आचार्य का,

ले सुखकारी नाम॥

सर्व साधु और सरस्वती,

जिन मन्दिर में सुखकार।

आदिनाथ भगवान को,

मन मन्दिर में धार॥

॥चौपाई॥

जै जै आदिनाथ जिन स्वामी,
तीनकाल तिहूं जग में नामी।
वेष दिगमबर धार रहे हो,
कर्मों को तुम मार रहे हो॥

हो सर्वज्ञ बात सब जानो,
सारी दुनिया को पहिचानो।
नगर अयोध्या जो कहलाये,
राजा नाभिराज बतलाये।
मरुदेवी माता के उदर से,
चैतबदी नवमी को जन्मे॥

हिन्दीपथ.कॉम

तुमने जग को ज्ञान सिखाया,
कर्मभूमि का बीज उपाया॥
कल्पवृक्ष जब लगे बिछरने,
जनता आई दुखड़ा कहने॥

सब का संशय तभी भगाया,
सूर्य चन्द्र का ज्ञान कराया।
खेती करना भी सिखलाया,
न्याय दण्ड आदिक समझाया॥

तुमने राज किया नीति का,
सबक आपसे जग ने सीखा।
पुत्र आपका भरत बताया,
चक्रवर्ती जग में कहलाया॥

बाहुबली जो पुत्र तुम्हारे,
भरत से पहले मोक्ष सिधारे।
सुता आपकी दो बतलाई,
ब्राह्मी और सुन्दरी कहलाई॥

हिंदीपथ.कॉम

उनको भी विद्या सिखलाई,
अक्षर और गिनती बतलाई।
इक दिन राजसभा के अन्दर,
एक अप्सरा नाच रही थी॥

आयु बहुत-बहुत अल्प थी,
इसलिए आगे नहीं नाच सकी थी।
विलय हो गया उसका सत्वर,
झट आया वैराग्य उमड़कर॥

बेटो को झट पास बुलाया,
राज पाट सब में बंटवाया।
छोड़ सभी झंझट संसारी,
वन जाने की करी तैयारी॥

हिंदीपथ.कॉम

राजा हजारों साथ सिधाए,
राजपाट तज वन को धाये।
लेकिन जब तुमने तप कीना,
सबने अपना रस्ता लीना॥

वेष दिगम्बर तजकर सबने,
छाल आदि के कपड़े पहने।
भूख प्यास से जब घबराये,
फल आदिक खा भूख मिटाये॥

तीन सौ वेसठ धर्म फैलाये,
जो अब दुनिया में दिखलाये।
छः महीने तक ध्यान लगाये,
फिर भोजन करने को धाये॥

भोजन विधि जाने नाहि कोय,
कैसे प्रभु का भोजन होय।
इसी तरह बस चलते-चलते,
छः महीने भोजन को बीते॥

नगर हस्तिनापुर में आये,
राजा सोम श्रेयांस बताए।
याद तभी पिछला भव आया,
तुमको फौरन ही पड़गाया॥

रस गन्ने का तुमने पाया,
दुनिया को उपदेश सुनाया।
तपकर केवल ज्ञान पाया,
मोक्ष गए सब जग हर्षाया॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

अतिशय युक्त तुम्हारा मन्दिर,
चांदखेड़ी भवरे के अन्दर।
उसका यह अतिशय बतलाया,
कष्ट क्लेश का होय सफाया॥

मानतुंग पर दया दिखाई,
जंजीरें सब काट गिराई।
राजसभा में मान बढ़ाया,
जैन धर्म जग में फैलाया॥

मुझ पर भी महिमा दिखलाओ,
कष्ट भक्त का दूर भगाओ॥

हिन्दीपथ.कॉम

॥सोरठा॥

पाठ करे चालीस दिन,
नित चालीस ही बार,
चांदखेड़ी में आयके,

खेवे धूप अपार।
जन्म दरिद्री होय जो,
होय कुबेर समान,
नाम वंश जग में चले,
जिनके नहीं संतान॥

जाप – ॐ हीं अहँ श्री आदिनाथाय नमः

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य जैन चालीसा

आदिनाथ चालीसा

अजितनाथ चालीसा

संभवनाथ चालीसा

अभिनंदननाथ चालीसा

सुमतिनाथ चालीसा

पद्मप्रभु चालीसा

सुपार्श्वनाथ चालीसा

चंद्रप्रभु चालीसा

पुष्पदंत चालीसा

शीतलनाथ चालीसा

श्रेयांसनाथ चालीसा

वासुपूज्य चालीसा

विमलनाथ चालीसा

अनंतनाथ चालीसा

धर्मनाथ चालीसा

शांतिनाथ चालीसा

कुंथुनाथ चालीसा

अरहनाथ चालीसा

मल्लिनाथ चालीसा

मुनि सुव्रतनाथ चालीसा

नमिनाथ चालीसा

नेमिनाथ चालीसा

पार्श्वनाथ चालीसा

महावीर चालीसा